एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सर्दियों में डेयरी पशुओं की देखभाल, आवास, आहार और स्वास्थ्य प्रबंधन

*रोहित कुमावत[1] एवं युवराज कुमावत[2]
[1]परास्नातक शोधकर्ता, पशु उत्पादन विभाग, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान-313001
[2]यंग प्लांट ब्रीडर, मास्टर्स इन जेनेटिक्स ऐंड प्लांट ब्रीडिंग, जोबनेर, जयपुर, राजस्थान-303328
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rohit786lyr@gmail.com

सर्दियों के मौसम में किसानों के सामने पशुओं प्रबंधन उत्पादन व स्वास्थ्य से जुड़ी मुख्य चुनौतियां होती हैं। भारत अपने विशाल और अलग-अलग भौगोलिक परिदृश्य के साथ कहीं जलवायु खण्डों में विस्तृत हैं जो पशुपालन व कृषि के लिए चुनौतियां उत्पन्न करता है। पशुपालकों के लिए सर्दियों का मौसम बहुत ही सावधानी बरतने वाला होता है। इस समय शरद हवाओं ने दस्तक दे दी है जो पशुओं के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती है। वह इस समय पशुपालकों को दुधारू पशुओं की काश देखभाल की आवश्यकता होती है क्योंकि इस समय पशु ठंड की चपेट में आ गए तो इसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है इससे दूध उत्पादन प्रभावित होता है। इससे पशुपालकों को चाहिए कि वह उन बातों का ध्यान रखें।

दुधारू पशुओं को विशेषत शेड के अंदर रखना चाहिए जिससे वातावरण में तापमान के उतार चढ़ाव का पशुओं पर कम से कम प्रभाव पड़े। सर्दियों में तापमान गिरने के साथ-साथ पशुओं को अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है जिससे पशु अपने शरीर का तापमान नियंत्रण कर सके। सभी स्तनधारी की तरह पशु भी गर्म रक्त वाले होते हैं उन्हें भी स्थिर तापमान शरीर का बनाए रखना होता है गाय, भैंसों का तापमान लगभग 38.5 °C (101.5 °F) होता है और इस तापमान से अधिक ताप बनाने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

ठंड में आवास प्रबंधन

सर्वप्रथम पशुओं के आवास को साफ सुथरा रखें व साथ ही जूट के बोरों का भी उपयोग कर सकते हैं पशु को ओढ़ने के लिए जिससे पशु को गर्माहट मिले ध्यान रखें पशु शाला का मुंह उत्तर दिशा में न खुले अगर खुला हो तो तिरपाल या टाट बोरी आदि से पर्दे बनाकर लगाये, आवास की खिड़कियां और दरवाजों को टाट बोरी से ढके वह उपलब्ध हो तो परदे लगाएं शाम वह सुबह पशु को कंबल या बोरी ओढ़ाए, व पशुओं को दिन के समय धूप में बांधे पर्स पर पुआल बिछाये, वह पर्स को सुख रखने का प्रयास करें जिससे पर्स की ठंड पशु को न लगे।

सर्दियों में आहार प्रबंधन

अगर सर्दियों में पशु को कपकपी आती है तो उसमें का पोषक तत्व का सर्वाधिक ध्यान रखना होता है इसलिए दुधारू पशु को अतिरिक्त खनिज मिश्रण खिलाएं सुबह पशुओं को आहार में दलिया व गुड़ साथ ही सरसों का तेल, बिनोल की खाली व मक्का बाजरा गेहूं का दलिया बनाकर दे मैथी व बाजरा पकाकर खिलाए, साथ ही अजवाइन में सरसों का तेल भी संतुलित आहार में शामिल करें चारे के रूप में सरसों, बथुआ, कासनी आदि चारों का उपयोग करें विशेष ध्यान देवे की पशुओं को सर्दी में हमेशा गुनगुना ताजा पानी ही पिलाये है।

ठंड में स्वास्थ्य प्रबंधन

सर्दियों में पशुओं को निमोनिया बुखार, जुखाम, अफरा व खुरपका मुंहपका की शिकायत रहती है सर्दियों में अधिकतर पशु हाइपोथर्मिया के शिकार हो जाते हैं जिससे दुग्ध उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है पशुओं को सुबह

आवास से सूर्य उदय के बाद ही धूप में निकाले व निकलने से पूर्व बोरी पशु को ओढ़ाकर निकाले पशुओं को सर्दियों में होने वाले रोगों के बचाव हेतु टीकाकरण पहले से ही करवाले।

ठंड के मौसम दुधारू में पशुओं पर प्रभाव

- **रोगों का प्रकोप**

सर्दियों के मौसम में पशुओं की सही देखभाल करनी चाहिए ठंड में जुकाम निमोनिया वह बुखार का प्रकोप अधिक रहता है इसलिए इसके बचाव हेतु प्रबंधन ही बचाव का उपाय हैं।

- **दुग्ध उत्पादन पर प्रभाव**

अगर पशुओं में कोई सामान्य बीमारी भी होती है तो इसका सीधा प्रभाव दुग्ध उत्पादन पर पड़ता है अतः सही आहार उचित प्रबंधन के द्वारा हम पशु को इन सभी जोखिम से बचा सकते हैं।

- **आहार में कमी**

ठंड में पशुओं को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है जिससे उनके पाचन तंत्र पर भी प्रभाव पड़ता है इसलिए कुछ वसायुक्त व खनिज मिश्रण युक्त संतुलित आहार ही पशुओं को खिलाएं।

- **श्वसन संबंधित रोगों का प्रकोप**

सर्द हवाओं के सीधे संपर्क में आने से श्वसन संबंधी रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

- **पशुपालकों पर जोखीम**

पशुपालकों के अगर पशु बीमार हो तो उसका सीधा प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है जिससे पशुपालकों को पर विपरीत प्रभाव पड़ता है ।

- **प्रजनन संबंधित समस्याएं**

छोटे दिनों का प्रभाव पशुओं के प्रजनन चक्र पर भी पड़ता है जिससे प्राकृतिक मदचक्र भी अनियमित हो सकता है जिससे प्रजनन में देरी वह गर्मी का पता लगाना कठिन हो जाता है जिस डेरी फार्म पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

तकनीकी हस्तक्षेप

जानकारी के अभाव में पशुपालक जोखिम उठा लेते हैं जिससे गलत प्रबंधन के द्वारा आर्थिक हानि उठानी पड़ती है भारत सरकार वह कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा कई पशुपालक संबंधित कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिससे पशुपालक सही प्रबंधन द्वारा आर्थिक हानियों से बच सकते हैं तकनीकी प्रसार शिक्षा द्वारा भी किसान वैज्ञानिकों से बात कर डेरी फार्म पर आ रही समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।